6 अव्यय एवं उपसर्ग

सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु।
वचनेषु च सर्वेषु यन्नव्येति तदव्ययम्।।

जिन शब्दों पर लिङ्ग, वचन, कारक आदि का कोई प्रभाव नहीं पड़ता, उन्हें अव्यय कहते हैं। अव्यय शब्द ज्यों-के-त्यों प्रयोग किये जाते हैं, उनमें कोई विभक्ति नहीं लगती।

अव्यय चार प्रकार के हैं–(१) उपसर्ग, (२) क्रिया विशेषण, (३) समुच्चय-बोधक, (४) मनोविकार-सूचक (विस्मय-बोधक)।

१. उपसर्ग

उपसर्ग को 'गति' भी कहते हैं। संज्ञा, विशेषण और क्रिया पदों के पहले जुड़कर उनके अर्थ में कहीं कुछ परिवर्तन कर देना ही उपसर्ग का विशेष प्रयोजन है। सामान्यत: जो शब्द किसी अन्य शब्द के पहले जुड़कर उसमें विशेषता उत्पन्न कर दें अथवा उसके अर्थ को बदल दें, उन्हें उपसर्ग कहते हैं, **जैसे–**

१. भवति = होता है।
अनु + भवति = अनुभव करता है।
प्र + भवति = प्रभवति = निकलता है।

२. गच्छति = जाता है।
आ + गच्छति = आता है।
उप + गच्छति = पास पहुँचा है।

३. हरति = चुराता है।
आ + हरति = आहरति = लाता है।
वि + हरति = विहरति = विहार करता है।
प्र + हरति = प्रहरति = प्रहार करता है।

४. वदति = कहता है।
अनु + वदति = अनुवाद करता है।
सं + वदति = बात करता है।
प्रति + वदति = उत्तर देता है।

५. चरति = चरता है, विचरण करता है।
उप + चरति = उपचार अर्थात् इलाज करता है।
उत् + चरति = उच्चरति = उच्चारण करता है।
अनु + चरति = अनुचरति = अनुगमन करता है।

उपसर्ग निम्नलिखित हैं–

	उपसर्ग	अर्थ	उपसर्गयुक्त शब्द
१.	**प्र**	विशेष रूप से	प्रचारः, प्रसारः, प्रख्यातम्, प्रहारः।
२.	**परा**	पीछे, विपरीत	पराक्रमः, परामर्शः, पराजयः, पराकाष्ठा।
३.	**अप**	दूर, विरोध	अपकारः, अपयशः, अपशब्दः, अपकर्षः।
४.	**सम्**	साथ, विशेष रूप से	संकल्पः, संसर्गः, सम्मोह, संग्रह।
५.	**अनु**	पीछे, साथ-साथ	अनुजः, अनुचरः, अनुभवः, अनुनय।
६.	**अव**	दूर, अनादर	अवगुणः, अवनति, अवलोकनम्, अवतारः।
७.	**निस्**	वियोग, बाहर, बिना	निस्सारः, निश्शंकः, निस्तत्वम्, निश्चितः।
८.	**दुस्**	बुरा, हीन, कठिन	दुस्तरः, दुष्करः, दुस्साहस।
९.	**वि**	विशेषता, अलग	विवादः, विरोधः, विदेशः, विज्ञानम्।
१०.	**आङ्(आ)**	स्वीकृति, दुःख, निकट	आरम्भः, आचारः, आग्रहः, आगमनम्।
११.	**नि**	नीचापन, समूह, निषेध	निवारणम्, निषेधः, नियुक्तः, निबन्धः।
१२.	**अधि**	ऊपर, विषय में, प्रधान	अधिकृतः, अधिभारः, अध्यक्षः, अध्यात्म।
१३.	**अति**	अधिक, बाहर	अतिशयः, अत्युत्तम्, अत्यन्तम्, अतिरिक्तम्।
१४.	**सु**	अच्छा, अत्यधिक	स्वागतम्, सुवेषः, सुस्वरः, सूक्तिः।
१५.	**उत्**	ऊपर, श्रेष्ठ	उत्पतिः, उन्नतिः, उत्तमः, उत्तरम्।
१६.	**अभि**	ओर, ऊपर	अभिमुखम्, अभियानम्, अभ्यागतः।
१७.	**प्रति**	ओर, पीछे, विरोध	प्रतिकूलम्, प्रत्युत्तरम्, प्रतिष्ठा, प्रतिध्वनिः।
१८.	**परि**	चारों ओर, और भी	परिचयः, परिजनः, परिवादः, परिश्रमः।
१९.	**उप**	निकट, शक्ति, दोष	उपदेशः, उपकारः, उपाधिः, उपदेयता।
२०.	**अपि**	निकट	अपिधान, अपिगीर्ण, अपिधि।
२१.	**निर्**	निषेध, रहित, बाहर	निरपराध, निर्गच्छति, निरक्षर।
२२.	**दुर्**	बुरा	दुराचारः, दुराग्रह, दुर्गति।

२. क्रिया-विशेषण

क्रिया-विशेषण अपने नाम के अनुसार किसी क्रियापद की विशेषता प्रकट करते हैं। इनसे साधारणतः ज्ञात होता है कि (१) क्रिया कैसे हुई? (२) कब हुई? (३) कहाँ हुई? और (४) क्यों हुई? कुछ महत्त्वपूर्ण क्रिया-विशेषण अर्थ के साथ नीचे दिये गये हैं–

क्रिया-विशेषण	अर्थ
अद्य	आज
अतः	इसलिए
अत्र	यहाँ
अजस्र	लगातार

सर्वत्र	सब जगह
अध:	नीचे
अधुना	अब
अभित:	सब ओर
इत:	यहाँ से
ओम्	ऐसा ही हो, हाँ
इतरेद्यु:	दूसरे दिन
किल	अवश्य ही

३. समुच्चय-बोधक

वाक्यों या पदों को जोड़ने, पृथक्करण आदि के लिए जिन पदों का प्रयोग होता है, उन्हें समुच्चय-बोधक कहते हैं।

प्रयोजन की दृष्टि से इसे दो भागों में बाँट सकते हैं–

(क) संयोजनात्मक–च = और; अथच = तब; इति = इस प्रकार; तथापि = फिर भी।

(ख) पृथक्करणात्मक–तु = तो; वा, अथवा = या।

४. मनोविकार-सूचक

मानसिक प्रतीतियों के प्रगाढ़ आवेश को कभी-कभी केवल एक शब्द से प्रकट करने के लिए जिन अव्ययों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें मनोविकार-सूचक अथवा विस्मय-बोधक कहते हैं। साधारणत: प्रयुक्त होने वाले ऐसे अव्यय नीचे दिये गये हैं–

(क) आश्चर्य और शोक सूचक–अहा, अहो, हा, अहह।

(ख) आनन्द तथा करुणासूचक–हन्त।

(ग) घृणा सूचक–किम्, धिक्।

(घ) दु:ख सूचक–हा, हन्त।

(ङ) कुछ विस्मय-बोधक पद पुकारने के लिए प्रयुक्त होते हैं–**यथा–**अये, अहो, रे, अरे। देवताओं के सम्बोधन के लिए–स्वाहा, स्वधा।

अभ्यास-प्रश्न

१. अव्यय किसे कहते हैं?

२. उपसर्ग क्या है?

३. उपसर्ग कहाँ लगते हैं?

(क) धातुओं के बाद (ख) धातुओं के पूर्व

(ग) धातुओं के मध्य (घ) धातु और प्रत्यय के मध्य।

४. 'अनुभवति' पद में लगा हुआ उपसर्ग है–

(क) अनु (ख) अन् (ग) अ (घ) आप्

५. 'आगच्छति' पद में लगा हुआ उपसर्ग है–

(क) आग (ख) आ (ग) अ (घ) अप्

६. धातुओं से पूर्व उपसर्ग लगाने से धातुओं के अर्थ पर क्या प्रभाव पड़ता है?

(क) अर्थ बदल जाता है (ख) अर्थ ज्यों का त्यों रहता है।

(ग) अर्थ कम होता है (घ) अर्थ बढ़ता है।

७. निम्नलिखित में उपसर्ग लिखिए–

विचरित, अपवदति, प्रयाग, निर्णयति, आचरति, प्रहरति, अनुगच्छति, प्रभवति।

८. उपसर्ग होते हैं–

(क) ३० (ख) २२ (ग) २४ (घ) १८

●●●